'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625 (2019)
Special Issue 247
Peer Reviewed-Referred & Indexed Journal
E-ISSN : 2348-7143
April - 2020

55
26

अनामिका की कविताओं में स्त्री

डॉ. साईनाथ उमाटे
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
दयानंद वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर
(महाराष्ट्र)
ईमेल- umatesai85@gmail.com
मो.9763334871

समकालीन हिंदी कविता की समूची विकास प्रक्रिया में हिंदी कवयित्रियों को स्वतंत्र रूप से रेखांकित करना कठीण है| समकालीन हिंदी कविताओं में स्त्री-विमर्श की एक नयी परंपरा का सुत्रपात करने एवं मनौवैज्ञानिक स्तर पर स्त्रियों की समस्याओं को कुशलता से उभारने के कारण हिंदी काव्य जगत में अनामिका का विशिष्ट स्थान है| उन्होंने स्त्री-विमर्श को एक नया आयाम दिया है| अनामिका न केवल स्त्री मुक्ति की बल्कि व्यापक अर्थ में मानव मुक्ति के लिए संघर्षरत हैं| वे स्त्री के सुख:दुख, जय-पराजय, स्वप्न-संघर्ष भावनाओं एवं राग विरागों को व्यापक संदर्भ में देखने की दृष्टि देती है| साथही उनकी कविताएँ हमें जागृत कर हमारा मार्ग भी प्रशस्त करती हैं | अनामिका की सृजनशीलता मानव मूल्यों से समझौता नहीं करती बल्कि समकालीन यथार्थ को सामने रखकर संघर्ष की प्रेरणा देती है |

अनामिका समकालीन हिंदी कविता की एक सशक्त हस्ताक्षर है| हिंदी कविता में जिन रचनाकारों ने स्त्री रचनाशिलता को एक कोटि के तौर पर स्थापित किया, अनामिका उनमें अग्रणी है| उन्होंने अपने काव्यसंग्रह – 'गलत पते की चिट्ठी', 'बीजाक्षर', 'समय के शहर में', 'अनुष्टुप', 'कविता में औरत', 'खुरदुरी हथेलियाँ', तथा 'दूब-धान' आदि के माध्यम से भारतीय स्त्री की आवाज को मुखर किया है| स्त्री विमर्श अनामिका की रचनात्मकता का व्यापक विषय है| यद्यपि कवयित्री ने इसे विमर्श की तरह नहीं बल्कि यथार्थ के रूप में चित्रित किया है| अनामिका एक प्रतिबध्द कवयित्री है| उनकी हर रचना में एक अनुभव परिलक्षित होता है|सभी वर्गो के स्त्रीयों का यथार्थ चित्रण इनके काव्य की विशेषता रही है| स्त्री जीवन की सच्चाईयों को उन्होने बडी बारीकी से उकेरा है| अनामिका उन तमाम ताकतों के खिलाफ निरंतर संघर्षशील प्रतीत होती है, जो समाज को अमानवीय बनाते है| मसलन पतिव्रता स्त्री के जीवन की पीडाएँ अपने ढंग से व्यक्त करती हुई कवयित्री लिखती है-

> जैसे कि अंग्रेजी राज में सूरज नहीं डूबता था,
> इनके घर में भी लगातार
> दकदक करती थी
> एक चिलचिलाहट|
> स्वामी जहाँ नहीं भी होते थे-
> होते थे उनके वहाँ पंजे,

मुहर, तौलिए, डंडे,
स्टैंप-पेपर, चप्पल जूते,
हिचकियाँ –डकारें-खर्राटे
और तौरियाँ-धमकियाँ-गालियाँ खचाखच|[1]

अर्थात पुरुषों की स्त्री के प्रति सोच बहुत संकुचित है | हम स्त्री को केवल एक बने बनाए 'फ्रेम' से देखते आये है | अपितु अनामिका का रचना संसार इस परिधि से बाहर आकर एक विस्तृत फलक में स्त्री को देखने, सुनने और समझने का आवाहन करता है| 'स्त्रीयाँ' नामक कविता में कवयित्री इसी भाव को दर्शाती है-

पढा गया हमको
जैसे पढा जाता है कागज
बच्चों की फटी कॉंपियों का
चनाजोर गरम के लिफाफे बनाने के पहले!
देखा गया हमको
जैसे कि कुफ्त हो उनींदे
देखी जाती है कलाई घडी
अलस्सुबह अलार्म बजने के बाद!
सुना गया हमको
यों ही उडते मन से
जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाने
सस्ते कैसेटों पर
ठसाठस ठुँसी हुई बस में![2]

अनामिका ने अपनी कविताओं में स्त्री मन के कई पक्ष उद्घाटित किये है| युगो-युगो से स्त्री विरोधी मानसिकता जो मनुष्य के अंत:करण में घर कर गयी है उसे कवयित्री बदलना चाहती है| यद्यपि स्त्री की वेदना, पीडा को कभी पुरुष सत्तात्मक समाज ने नहीं समझा, उसे मात्र भोग्या माना | कवयित्री अपनी कविताओं में स्त्री को मात्र भोग्यवस्तु मानने वालों के प्रति क्रोध व्यक्त करती है| अनामिका की 'स्त्रियाँ' नामक कविता की स्त्री मानो कह रही है-

भोगा गया हमको
बहुत दूर के रिश्तेदारों के
दु:ख की तरह!
एक दिन हमने कहा
हम भी इंसान है-
हमें कायदे से पढों एक-एक अक्षर
जैसे पढा होगा बी-ए के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन![3]

प्रस्तुत पंक्तियों का तात्पर्य यह है कि स्त्रियाँ अपने प्रति सकारात्मक सोच चाहती है| अनामिका अपनी कविताओं के माध्यम से उस स्त्री की तलाश करती है, जो आधुनिक पढी-लिखी, अपने अधिकार तथा कर्तव्य के प्रति सचेत हो | कवि ने कहा इस संग्रह के आत्मकथ्य में अनामिका लिखती है-"वास्तविक जीवन-जगत् के चरित्र

हों या क्लासिकों के चरित्र-मेरी कल्पना के स्थायी नागरीक वही बनते जिन्हें कभी न्याय नही मिला, जो हमेशा लोगों की गलतफहमी का शिकार हुए, दुनिया नें जिन्हे कभी न प्रेम दिया, न मान | भीतर से वे जितने अगाध होते, उतने ही अकेले !"[4]

इस तरह अनामिका नें व्यक्तिगत अनुभवों को सार्वजनिक संदर्भो में इस तरह व्यक्त किया है कि पाठकों को वह अपना अनुभव प्रतीत होता है |

अनामिका एक संघर्षशील, सजग कवयित्री है | अत: इनकी अधिकांश कविताएँ स्त्री मुक्ति से संदर्भित है| उनकी कविताओं में जहाँ स्त्री के आँसू है, तो दूसरी तरु विद्रोह के स्वर भी परिलक्षित होते है | मसलन अनामिका की 'दूब-धान', 'खुरदुरी हथेलियाँ', 'गृहलक्ष्मी' 'स्नान' 'चमक के अलावा', 'यौन दासी', 'सेफ्टी पिन', 'चौदह बरस की सेक्स वर्कर्स', 'चिठ्ठी लिखती हुई औरत', 'वृध्दाएँ' आदि कविताओं में स्त्री के संघर्ष को रेखांकित किया है| अनामिका की काव्य-यात्रा के संबंध में प्रतिष्ठित आलोचक मदन कश्यप लिखते है- "अपनी कोमल भावनाओं जथा विवेकशीलता और संवेदनशीलता के कलात्मक संयोजन के कारण अनामिका की कविताएँ अलग से पहचानी जाती है| स्त्री विमर्श के इस दौर में स्त्रियों के संघर्ष और शक्ति का चित्रण तो अपनी-अपनी तरह से हो रहा है, लेकिन महादेवी वर्मा ने जिस वेदना और करूणा को अपनी कविता के केंद्र में रखा था, उसका विस्तार केवल अनामिका ही कर पाती है | वह सहज ही स्त्री के दु:ख को वंचितजनों के दु:ख से जोड लेती है| लेकिन ऐसा करते हुए भी भारतीय समाज में पुरुष सत्ता और संघर्ष का सरलीकरण या सामान्यीकरण नहीं करतीं |"[5]

अनामिका स्त्री अस्मिता की तलाश में जीवन का प्रत्येक कोना झाँकती प्रतीत होती है और स्त्री के प्रत्येक रूप का विवेचन करती है | हर रूप में स्त्री घर, समाज, रिश्ते-नातों को सँवारती है | चाहे स्त्री अम्मागिरी करें, बुआपंथी या अन्य किसी रिश्ते में रहे हमेशा से ही अलग-अलग कलेवर में पुरुषों को विकासोन्मुख करती आई है| अनामिका 'मौसिया' शीर्षक कविता में स्त्री के जीवन की छोटी-छोटी उलझते सुलझाती हुई लिखती है -

"वे बारिश में धूप की तरह आती हैं
थोडे समय के लिए और अचानक!
हाथ के बुनें स्वेटर, इंद्रधनुष, तिल के लड्डू
और सधोर की साडी लेकर
वे आती है झूला झुलाने
पहली मितली की खबर पाकर
और गर्भ सहलाकर
लेती हैं अंतरिम रपट
गृहचक्र, बिस्तर और खुदरा उदासियों!"[6]

प्रस्तुत कविता अनुभव तथा संवेदना से युक्त स्त्रियों के कोमल भावों को प्रकट करती है| गर्भ के समय जब स्त्रियों को अपनों के सहयोग की दरकार होती है तब ये मौसियाँ, ऑम्मा, चाची तथा बुआ ही काम में आती है | गर्भिणी स्त्री के विषय में इस प्रकार का चित्रण बिरला ही है |

स्त्री की संवेदना को कभी पुरुषों ने नहीं समझा, उसे मात्र भोग्य माना यद्यपि देह व्यापार का, यौन का उग्र रूप भी हमारे समाज में विद्यमान है | जो समाज स्त्री काया को सम्मानपूर्वक जीने का अवसर नही देता,

तब अनामिका उन स्त्रियों को पहचान दिलाना चाहती है जिन्हें समाज एक कलंक मानता है | अनामिका स्त्री के यौन शोषण का मुद्दा उठाती है और 'यौन-दासी' नामक कविता में बेबाक लिखती है-

एक गुफा है
मेरी नाभि के नीचे
अपनी ही खूँखारिता से थके
शेर-चीते-अजगर
आते है कुछ देर सोने यहाँ पर!
एक नये आखेट की खातिर
जाते हैं जब अगले दिन बाहर
उनके वे टूटे नाखून
राल, केंचुल
एक अजब बहनापे से देखते है मुझे !
मकडी के जालों से आती हुई
सूरज की पहली किरण
पडती है बुझी हुई धूनी पर |[7]

स्त्री के इसी दुःख दर्द और स्त्री मुक्ति के सवालों को अनामिका अपनी कविताओं में उठाती है | अपितु यौनदासियों के यौन शोषण से लेकर कॉल-गर्ल तक के यौन शोषण को अपनी कविता के परचम के नीचे लाकर पाठक तथा समाज का ध्यान इस ओर आकृष्ट करती है | अनामिका लिखती है- "अगर मेरी कोई लैंगिक अस्मिता है तो चाहते न चाहते मेरी एक जातीय, वर्गीय अस्मिता भी है जो पॉलिथीन के खोल की तरह मेरी जान को लगी है | अगर कभी आपने किसी अस्पताल के बर्न वॉर्ड में बींस प्रतिसत बर्न का केस देखा हो तो आप मेरी बात समझ सकेंगे- पिघली हुई नाइलॉन की साडी जैसे चमडी से सट जाती है- मेरी लैंगिक पहचान मेरी जातीय या वर्गीय अस्मिता मेरी चमडी से ऐसे आ रही है कि लगता है-अब तो ये मेरी जान के साथ ही जाएगी |"[8]

चूँकी अनामिका की कविताओं में भारतीय स्त्री की मुक्ति की छटपटाहट है | एक ओर परंपरा का उत्कट मोह है तो दूसरी तरफ आधुनिक होने की आकांक्षा| भारतीय स्त्री की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक स्थिति कवयित्री के काव्य का केंन्द्रिय विषय है |

निष्कर्षत: अनामिका की कविताएँ स्त्री संवेदना को खंगालती समकालीन हिंदी कविता का एक मानदंड स्थापित करती है| स्त्री के अन्तर्मन की आवाज को मुखरित करती अनामिका की कविता हमारे सामने ढेर सारे सवाल करती है| अनामिका के काव्य-यात्रा की स्त्री कहती है कि स्त्री टूटती नही है, तोडी जाती है | कभी समाज के द्वारा तो कभी खुद के द्वारा| इसलिए कवयित्री 'दरवाजा' नामक कविता में लिखती है-

मैं एक दरवाजा थी,
मुझे जितना पीटा गया
मैं उतनी खुलती गई |[9]

स्त्री के गहरे एहसासों को अपने रचना-संसार में व्यक्त करती अनामिका संघर्ष करती हुई नजर आती है| अत: कवयित्री का काव्य लेखन अन्य समकालीन स्त्री काव्य लेखन से भिन्न है| समकालीन हिंदी कविता में स्त्री अस्मिता तथा स्त्री संघर्ष को स्वर प्रदान करने में उनका काव्य अतुलनीय है | यद्यपि उनकी कविताएँ सिर्फ स्त्री

से जुडी समस्याओं को ही नही बल्कि वृत्तहर समाज की विडंबनाओं को भी परखती है| समकालिन हिंदी कविता के मानचित्र में अनामिका का अपना अलग मुकाम है| इसलिए उन्होने अपने काव्य-यात्रा की अंतर्वस्तु भाषा और शिल्प का एक नया धरताल निर्मित किया है| चूँकी उनका काव्य भाषिक संरचना के स्तर पर भी प्रभावशाली है| काव्य भाषा में अंग्रजी, हिंदी, संस्कृत, उर्दू एवं आँचलिक शब्दों की भरमार है | अपनी कविताओं में वे कभी व्यंग्य, कभी बिंब, कभी लोकरंग तो कभी मुहावरें एवं कहावतों का प्रयोग करती है | अंतत: हम इतना कह सकते है कि स्त्री विमर्श को नया आयाम देने में समकालीन कवयित्री अनामिका के काव्य का महत्वपूर्ण स्थान है| स्त्री संवेदनाओं को मुखर करने वाली उनकी कविताएँ समकालीन कवियों के बीच अपना विशिष्ट स्थान रखती है |

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. कवि ने कहा – अनामिका, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली- संस्करण-2011 पृ.सं.18
2. तत्रैव, पृ.सं.09
3. तत्रैव, पृ.सं.09
4. तत्रैव, पृ.सं.05
5. तत्रैव, पृ.सं.11
6. तत्रैव, पृ.सं.13
7. दूब-धान – अनामिका, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम सं- 2007 पृ.सं. 66
8. कविता में औरत – अनामिका, इतिहास बोध प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण – 2004 पृ.सं.7-8
9. कवि ने कहा – अनामिका, किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली- संस्करण-2011 पृ.सं.121